bdkbZ 9 f'k{k.k&vf/kxe çfØ;k % vFkZ'kkL= ds fo'k"k lanHkZ esa

bdkbZ dh :ijs[kk

9.1 प्रस्तावना

9.2 उद्देश्य

9.3 अर्थशास्त्र प्रकृति–क्षेत्र एवं विधि

- 9.3.1 अर्थशास्त्र क्या है?
- 9.3.2 अर्थशास्त्री क्या कार्य करते हैं और कैसे करते हैं?

9.4 अर्थशास्त्र क्यों पढ़ाया जाए? अर्थशास्त्र का पाठ्यक्रम संबंधित उद्देश्य

9.5 अर्थशास्त्र शिक्षण अधिगम की विधियाँ

- 9.5.1 व्याख्यान विधि
- 9.5.2 परिचर्चा विधि
- 9.5.3 समस्या आधारित अधिगम
- 9.5.4 अर्थशास्त्र में अनुरुपित खेल पद्धति
- 9.5.5 संप्रत्य मानचित्र के द्वारा अधिगम
- 9.5.6 परियोजना
- 9.5.7 क्षेत्र भ्रमण
- 9.5.8 आँकड़ों का विश्लेषण एवं विवेचन
- 9.5.9 साथी एवं सहयोगी अधिगम विधि
- 9.5.10 दस्तावेज विशेषण

9.6 शिक्षण अधिगम संसाधन

- 9.6.1 पाठ्यपुस्तक
- 9.6.2 सहायक पाठ्यसामग्री
- 9.6.3 चार्ट, रेखाचित्र तथा चित्र (ग्राफिक्स)
- 9.6.4 समाचारपत्र, रेडियो एवं टेलीविजन
- 9.6.5 मल्टी मीडिया सामग्री
- 9.6.6 इंटरनेट

9.7 सारांश

9.8 संदर्भ ग्रंथ एवं उपयोगी पठन सामग्री

9.9 अपनी प्रगति की जाँच हेतु उत्तर

9-1 ÁLrkouk

प्रत्येक मनुष्य कुछ ऐसे कार्यकलाप करता है जिनमें कुछ ऐसे आदान–प्रदान शामिल होते हैं जो उनके जीवन के लिए आवश्यक हैं। कुछ प्रकार के आदान प्रदान में रुपया–पैसा शामिल होता है तो अनेक प्रकारों में कुछ भी नहीं। जब हम दूध खरीदते हैं तो हम पत्र मुद्रा अर्थात रुपया या धातु मुद्रा अर्थात सिक्कों के रुप में धन का प्रयोग करते हैं। भारत में किसानों में एक–दूसरे के खेत में काम कर अपने श्रम का आदान–प्रदान करना सामान्य बात है। अर्थशास्त्र एक सामाजिक विज्ञान है जो इस प्रकार के आदान–प्रदान में शामिल हमारे समाज एवं मनुष्य के व्यवहार के अध्ययन से संबंधित है। इस इकाई में आप अर्थशास्त्र के शैक्षणिक आयामों के विषय में जानेंगे।

9-2 mís’;

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आपः

- पद ‘अर्थशास्त्र’ की व्याख्या कर सकेंगे;
- अर्थशास्त्रियों द्वारा उनके व्यवसाय में में अपनाए जाने वाले उपागमों – उनके अनुसंधान विधियों का वर्णन कर सकेंगे;
- विद्यालय में अर्थशास्त्र शिक्षण के उद्देश्य की चर्चा कर सकेंगे;
- अर्थशास्त्र शिक्षण के लिए आवश्यक विधियों का वर्णन कर सकेंगे; तथा
- अर्थशास्त्र के ज्ञान के महत्वपूर्ण स्रोतों का उल्लेख कर सकेंगे।

9-3 vFk’kkL= çÑfr&{k= ,o fof/k

9-3-1 vFk’kkL= D;k g\

समाज वैज्ञानिक अर्थशास्त्र को भिन्न तरीके से परिभाषित करता है। ये परिभाषाएँ न सिर्फ विवादास्पद एवं प्रत्येक व्यक्ति द्वारा अस्वीकृत है बल्कि परिवर्तनशील भी हैं। इसके पीछे कारण यह है कि अर्थशास्त्र एक ऐसा विषय है, जिसे प्रत्येक व्यक्ति अपने तरीके से समझना चाहता है। ऐसा समस्त विश्व में प्रचलित उत्पादन एवं विनिमय के प्रणाली के जटिल प्रकृति के कारण भी है – समाज विज्ञान के विभिन्न विषयों में अर्थशास्त्र सबसे नया है और पिछले 250 वर्षों से इसका विकास हो रहा है।

अर्थशास्त्र में चिंतन विभिन्न संप्रदाय हैं और इनकी जड़ें राजनीति में गहरी पैठी हुई हैं। मुख्य संप्रदायों में शास्त्रीय संप्रदाय, नवशास्त्रीय संप्रदाय, केंसियन संप्रदाय, पश्च केंसियन संप्रदाय, मार्क्सयिन संप्रदाय, ऑस्ट्रियन संप्रदाय, संस्थानिक (इंस्टीट्यूशनल) संप्रदाय, विकासवादी (इवॉल्युशनरी) संप्रदाय तथा महिलावादी (फेमिनिस्ट) संप्रदाय आदि का नाम उल्लेखनीय हैं। अर्थशास्त्री जो आर्थिक पक्षों से संबंधित कार्य–व्यापार करते हैं, पद ‘अर्थशास्त्र’ को, उस संप्रदाय जिनका वे अपने आर्थिक व्यवहार के समय समर्थन एवं अनुगमन करते हैं, के आधार पर परिभाषित एवं प्रयुक्त करते हैं।

मान लीजिए कि आपने इंटरनेट पर गूगल सर्च इंजन (https://www-google-co-in) में ‘अर्थशास्त्र क्या है’ टंकित किया और मॉनिटर पर निम्नलिखित संदेश दिखाई देने लगा–

- ”ज्ञान की वह शाखा जो उत्पादन, उपभोग एवं धन के हस्तांतरण से संबंधित है“।
- अमेरिकन इकोनॉमिक एसोसिएशन जोकि विश्व के अर्थशास्त्रियों के सबसे प्राचीन संघ है, अपनी वेबसाइट पर अर्थशास्त्र की परिभाषा को निम्नवत प्रदर्शित करता है;
- ”अर्थशास्त्र मानव द्वारा संसाधनों के प्रयोग करने के तरीके के चयन का अध्ययन है“।

इस वेबसाइट पर 3 प्रसिद्ध अर्थशास्त्रियों की परिभाषाएं भी दी गई हैं:

”अर्थशास्त्र मानव जीवन के सामान्य कार्य व्यापार का अध्ययन है“ (अल्फ्रेडमार्शल, *प्रिंसिपल ऑफ इकोनॉमिक्स, ऐन इंट्रोडक्टरी वॉल्यूम,* मैकमिलन, लंदन, 1890)।

”अर्थशास्त्र वह विज्ञान है जो, दिए गए साध्यों एवं दुर्लभ साधनो जिनके की वैकल्पिक उपयोग हैं के सम्बन्ध के रूप में, मानव व्यवहार का अध्ययन करता है“ (लियोनेलरॉबिंस, *ऐन एसे ऑनदनेचर ऑफ ऑनदनेचर एंड सिग्निफिकेंस ऑफ इकोनॉमिक्स,* साइंस, मैकमिलन, लंदन, 1932)।

"अर्थशास्त्र, समाज द्वारा दुर्लभ संसाधनों का मूल्यवान व्यापारिक वस्तुओं के उत्पादन करने तथा विभिन्न मनुष्यों में उसे वितरित करने के लिए प्रयोग किए जाने वाले तरीके का अध्ययन करती है" (पॉल ए. सैमुल्सन, *इकोनॉमिक्स*, मैक्ग्रा हिल, न्यूयॉर्क, 1948)।

आप इन परिभाषाओं में सामान्य क्या पाते हैं? अर्थशास्त्र एक सामाजिक विज्ञान है जिसका आशय यह कि इस विषय में मानवका समाज में व्यवहार का अध्ययन किया जाता है। इस विषय के चार मुख्य क्षेत्र – उत्पादन, वितरण, उपभोग एवं वस्तुओं तथा सेवाओं का आदान–प्रदान है। अर्थशास्त्रियों द्वारा अर्थशास्त्र के उपकरणों का प्रयोग विविध परिस्थितियों में किया जाता है। अर्थशास्त्री समाज वैज्ञानिकों का एक समूह है जो समाज में होनेवाले विभिन्न समस्याओं एवं मुद्दों का अध्ययन करती है। वे अर्थशास्त्र के विविध पक्षों यथा समष्टि अर्थशास्त्र, व्यष्टि अर्थशास्त्र, राजकोषीय अर्थशास्त्र, विकासात्मक अर्थशास्त्र, अंतर्राष्ट्रीय व्यापार, आदि का अध्ययन करते हैं। यह, अन्य क्षेत्रों में जो बातें हो रही हैं, उन्हीं के समान है। पहले हम उपचार के लिए जितने डॉक्टर्स के पास जाते थे उनमें से अधिकांश सामान्य प्रेक्टिशनर (डॉक्टर्स), अर्थात ऐसे डॉक्टर जिनके पास 'एम.बी.बी.एस.' की उपाधि होती थी, होते थे। अब जब हम अस्पताल में जाते हैं हम विशेषज्ञों – यथा, हड्डी रोग विशेषज्ञ, शिशु रोग विशेषज्ञ, हृदयरोग विशेषज्ञ, आदि की खोज करते हैं। जैसे–जैसे अर्थशास्त्र में नए–नए कार्यकलाप विकसित होते जा रहे हैं अर्थ्शास्त्रियों का कार्य भी अति विशिष्ट होते जा रहा है। पहले अर्थशास्त्र का अध्ययन की आवश्यकता इतिहास, तर्कशास्त्र, दर्शनशास्त्र, आदि का अध्ययन था। अब अर्थशास्त्र का विद्यार्थी गणित, कंप्यूटर प्रोग्रामिंग, मनोविज्ञान, आदि पढ़ता है।

ck/k Á'u

fVIi.kh क) अपने उत्तरों को दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए।

ख) अपने उत्तरों को इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाइए।

1) अर्थशास्त्र की परिभाषा में पद 'दुर्लभता' किस बात पर बल प्रदान करती है?

....

....

....

....

2) ऐसे दो हस्तांतरण जिनमें कि आदान–प्रदान शामिल हों का उदाहरण दें।

....

....

....

....

....

3) अर्थशास्त्री कौन हैं?

....

....

....

....

9.3.2 अर्थशास्त्री क्या करते हैं और कैसे करते हैं?

जैकब विनर नाम के एक अर्थशास्त्री ने बहुत पहले कहा था– " अर्थशास्त्र वह है जो अर्थशास्त्री करते हैं"। एक अर्थशास्त्री के रूप में काम करने के लिए अर्थशास्त्र के सिद्धांतों एवं प्रकार्यों के ज्ञान एवं समझ की आवश्यकता होती है। आर्थिक सिद्धांत को व्यापक रुप में "एक विस्तृत कथन, जिसमें की अवलोकित आर्थिक घटनाओं के मध्य सार्थक सम्बन्ध निहित होता है" के रूप में परिभाषित किया जाता है।अर्थव्यवस्था एक काल्पनिक स्थान है जिसमें हम वस्तुओं एवं सेवाओं के उत्पादन एवं उपभोग के लिए कार्य करते हैं। हम बाजार से सब्जी खरीदते हैं। क्यों टमाटर, प्याज, एवं अन्य सब्जियों के दाम सिर्फ भिन्न–भिन्न ही नहीं होते हैं बल्कि रोज परिवर्तित भी होते हैं। भारत में सैकड़ों एवं हजारों वस्तुएँ एवं सेवाएँ, जिनकी कीमत अलग तरीके से निर्धारित की जाती है, बेची एवं खरीदी जाती हैं। हम इसे किस प्रकार समझ सकते हैं? मान लीजिए कि आप एक नई वस्तु का उत्पादन करते हैं और उसे बाजार में बेचना चाहते हैं। कैसे उत्पादक को यह पता चलेगा कि कितना उत्पादन करना है और किस मूल्य पर करना है? सरकार का यह दायित्व होता है कि वह अपने क्षेत्र की आर्थिक गतिविधियों को समझें। कैसे वे विभिन्न बाजारों में विनमयित की जाने वाली वस्तुओं एवं सेवाओं के माँग, मूल्य एवं आपूर्ति को समझ सकते हैं? वस्तुओं एवं सेवाओं के उत्पाद को की भी इच्छा होती है कि वह वस्तुओं एवं सेवाओं के माँग, आपूर्ति एवं मूल्य स्तर का ठीक उसी प्रकार पूर्वकथन कर सके जैसे की मौसम विज्ञानी मौसम एवं वर्षा का पूर्वानुमान करते हैं। इस उद्देश्य के लिए अर्थशास्त्री उपभोक्ता व्यवहार का सिद्धांत प्रदान करते हैं। यह एक आर्थिक प्रतिमान का उदाहरण है। जब प्रतिमान ज्यादा मशहूर हो जाते हैं एवं व्यापक रुप से प्रयोग किए जाने लगते हैं तब वे सिद्धांत बन जाते हैं।

प्रत्येक आर्थिक सिद्धांत समूह एवं संस्थाओं के सामान्य व्यवहार को प्रदर्शित करते हैं क्योंकि वे विविध परिस्थितियों में पाए जाने वाले सामान्य तत्व को प्रतिबिंबित करते हैं। आर्थिक सिद्धांतों का उद्देश्य विशिष्ट व्यक्ति या संस्था के व्यवहार का वर्णन करना नहीं है लेकिन वह अक्सर इस बात का पूर्व कथन करते हैं कि कैसे एक समूह परिस्थितियों के दिए गए समूह में प्रतिक्रिया करती है। आर्थिक सिद्धांत अर्थव्यवस्था या आर्थिक घटना के व्यवहार को समझने एवं उसके सम्बन्ध में संभावित कथन कहने या निर्णय लेने में भी हमारी सहायता करते हैं। इन सब बातों के लिए अर्थशास्त्री एक मान्यता, 'यदि अन्य बाते समान रहे', का उपयोग करते हैं। यह एक महत्वपूर्ण लैटिन फ्रेज '*Ceteris paribus*' है। यह भौतकी एवं जैव वैज्ञानिकों द्वारा किए जाने वाले नियंत्रित प्रयोग के समान है।

अर्थशास्त्र सम्बन्धी पाठ्यपुस्तकों के दो मशहूर लेखक आर. जी. लिप्से एवं के. ए. क्रिस्टल ने यह सुझाया कि प्रत्येक आर्थिक सिद्धांत कुछ तर्कों पर आधारित होते हैं तथा उनक एक विशिष्ट प्रारुप होता है जिसकी संरचना का निर्माण आर्थिक सिद्धांतों के संप्रत्यय एवं मान्यताओं का प्रयोग करके किया जाता है।

आधुनिक समय में अर्थशास्त्री गणित, सांख्यिकी एवं तर्कशास्त्र का प्रयोग प्रतिमानों के विकास के लिए कर रहे हैं। एक मशहूर अर्थशास्त्री ए. सी. चियांग कहते हैं कि गणितीय रूप से अर्थशास्त्र के सिद्धांतों के निर्माण के निम्नलिखित लाभ हैं:

1) प्रयुक्त भाषा अधिक संक्षिप्त एवं शुद्ध होती है।

2) गणितीय प्रमेय की अटूट संपदा हमारी सेवा के लिए उपलब्ध है (तर्कशक्ति के आधार पर निर्णय लेने के लिए)

3) यह हमें बाध्य करती है कि हम अपनी सारी मान्यताओं को गणितीय प्रमेय के उपयोग की पूर्वशर्तों के रुप में प्रकट करें।

4) यह हमें सामान्य एवं विचरणशील घटनाओं के उपचार की इजाजत देती है। हालांकि विश्वभर में कुछ अर्थशास्त्री ऐसे भी है जो चियांग के दृष्टिकोण से सहमत नहीं है।

अर्थशास्त्र में सारी मान्यताएँ वास्तविक नहीं हैं। हालाँकि ऐसे मान्यताओं पर आधारित प्रतिमान अर्थव्यवस्था या आर्थिक सम्बन्धों के व्यवहार में सशक्त अंतर्दृष्टि के द्वार खोलते हैं। उदाहरण के तौर पर एक पूर्ण प्रतियोगी बाजार वास्तविक रुप में अस्तित्व नहीं रखता है फिर भी हम इनकी विशेषताओं तथा निहितार्थ को समझते हैं क्योंकि यह सबसे ज्यादा प्रभावशाली बाजार की संरचना है। पूर्ण प्रतियोगिता की गहन समझ हमें बाजार की अन्य संरचनाओं यथा एकाधिकार, अल्पाधिकार, एकाधिकारी प्रतियोगिता, आदि की मूल्य एवं परिणाम के प्रभाव के संदर्भ मे तुलना करने एवं भेद करने की आज्ञा देता है। अर्थशास्त्र में तकनीकी पद शामिल होते हैं। लिप्से यह सुझाव देते हैं कि ये अभिव्यक्ति को सशक्त करने के लिए आवश्यक हैं तथा विषय के विकास एवं विस्तार के साथ–साथ आवश्यक हैं। आइए कुछ उदाहरण देखते हैं। शब्द 'खाना' का क्या अर्थ है? इसका अर्थ है अपने हाथों का प्रयोग करके खाद्य सामग्री को मुँह में रखना, खाना एवं निगल जाना। एक शब्दखाना 12 शब्दों के आशय को स्पष्ट करता है। तकनीकी शब्द आर्थिक व्यवस्था के जटिल स्वरूप को समझने में सहायता करते हैं। जिन शब्दों का प्रयोग हम अपने दैनिक जीवन में करते हैं अर्थशास्त्र में उनके अर्थ भिन्न होते हैं। उदाहरण के तौर पर सामान्य शब्दों में 'माँग' का आशय होता है माँगना। अर्थशास्त्र में, इसका अर्थ "एक उपभोक्ता के किसी विशिष्ट वस्तु या सेवा के लिए कीमत को देने की इच्छा एवं तत्परता से होता है"। जब एक प्रतिमान में तार्किक रूप से अनेक विचारों को एक साथ संयुक्त किया जाता है तब अभिव्यक्ति को सशक्त एवं शुद्ध करने के लिए संप्रत्ययों एवं तकनीकी शब्दों का प्रयोग उचित हो जाता है।

अर्थशास्त्री मानव व्यवहार का अध्ययन करते हैं जिसे न तो नियंत्रित किया जा सकता है और नहीं पूर्वानुमानित किया जा सकता है। इसका आशय यह भी है कि हम अमित तत्व पूर्वानुमान नहीं किए जा सकने वाले अनेक तत्वों को इजाजत देते हैं। हालाँकि हम समाज, जिसमें कि मनुष्य अधिकांशतः व्यवस्थित रुप से व्यवहार करता है, में रहते हैं। अर्थशास्त्री इस व्यवस्थित व्यवहार का प्रयोग अनेक आर्थिक पक्षों एवं परिणामों के सामान्यीकरण करने एवं पूर्वकथन करने के लिए करते हैं।

अर्थशास्त्र के अधिगम के लिए आर्थिक घटनाओं, यथा एक अर्थव्यवस्था के विविध आर्थिक पक्षों के मध्य सम्बन्धों की समझ आवश्यक है। इसके लिए अर्थशास्त्री आर्थिक सूचनाओं को इकट्ठा करते हैं, मापते हैं एवं विश्लेषित करते हैं। चूँकि मनुष्य का आर्थिक व्यवहार अक्सर मापे जाने योग्य रूप में परिवर्तित होता रहता है, इसलिए उनका संकेतन एवं सारणीयन कर लिया जाता है। वह परिणामों को अंकीय आंकड़ों के रूप में तालिका में निबद्ध कर देते हैं एवं इसके बाद इसका विवेचन करते हैं। यह कार्यकलाप घरों के समूह या किसी उद्यम के अर्थव्यवस्था के किसी विशिष्ट आर्थिक घटना के समूह गतिकी को समझने में सहायता करता है एवं अर्थशास्त्र अधिगम की आधार शिला भी रखता है।

अर्थशास्त्र में कुछ ऐसे संप्रत्यय एवं मान्यताएँ शामिल होती हैं जिनके विषय में सामान्यीकरण करते समय हमें बहुत सावधान रहना पड़ता है। हम सब यह जानते हैं कि बचत हमारे लिए अच्छी है। हालाँकि यह देश के लिए अच्छी नहीं है। यदि सभी मनुष्य बचत करने लगेंगे तो वस्तुओं एवं सेवाओं में कमी आ जाएगी तथा अर्थव्यवस्था में वृद्धि नहीं होगी। इसको 'रचना का भ्रम (फैले सी ऑफ कंपोजीशन)' की संज्ञा दी जाती है। जो एक व्यक्ति के लिए अच्छी है पूरे राष्ट्र के लिए अच्छी हो यह आवश्यक नहीं है। इसी प्रकार, हमें सामान्यीकरण करते समय भी सावधान रहना चाहिए। उदाहरण के तौर पर जब एक व्यक्ति अपनी आमदनी से ज्यादा खर्च करता है तो वह दिवालिया हो सकता है। इसका अर्थ यह नहीं है कि यदि कोई सरकार अपने राजस्व से ज्यादा खर्च कर रही है तो उसे हानि नहीं होती है। जबकि यह बात सिद्ध हो चुकी है यदि लोक कल्याण के लिए सरकार अधिक खर्च कर रही हैं तो इसमें कोई हानि नहीं है। इसे 'मिथ्या सादृश्यता (फाल्स एनालॉजी)' कहते हैं। हमें आर्थिक घटनाओं के क्रम या कारण तथा प्रभाव के प्रति भी सावधान रहना चाहिए। मान लीजिए कि भारत सरकार ने रोजगार के अवसरों में वृद्धि करने तथा अर्थव्यवस्था को उत्तेजित करने के लिए के लिए करों में कमी लाती है। यह बेरोजगारी में कमी एवं सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि की ओर

ले जाती है। हम यह निष्कर्ष नहीं निकाल सकते हैं कि कर में कमी भारत की अर्थव्यवस्था में वृद्धि लाती है। यह संभवतः कर में कमी आने से पहले हो चुकी होती है एवं यह सिर्फ एक संयोग भी हो सकता है। किसी निष्कर्ष पर आने से पहले हमें सभी कारकों पर समग्र रूप से ध्यान देना चाहिए।

ck/k Á'u

fVIi.kh क) अपने उत्तरों को दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए।

ख) अपने उत्तरों को इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाइए।

4) आर्थिक सिद्धांत समाज को समझने में कैसे सहायता करते हैं?

5) अर्थशास्त्र में मान्यताएँ क्यों आवश्यक हैं?

6) अर्थशास्त्र में गणित के प्रयोग के दो लाभ लिखिए।

7) अर्थशास्त्र अधिगम में ली जाने वाली तीन महत्वपूर्ण सावधानियों को लिखें।

9-4 vFk'kkL= D;ksa i<k,¡ % vFk'kkL= ds ikB;Øe lEcU/kh mís';

सामाजिक विज्ञान के एक भाग के रूप में कक्षा 6 से कक्षा 10 तक अर्थशास्त्र भारत सहित अनेक देशों में पढ़ाया जाता है। उच्चतर माध्यमिक स्तर पर यह वैकल्पिक विषय के रूप में पढ़ाया जाता है।

भारतीय 18 साल की आयु में कक्षा 12 को पूरा कर लेने के बाद मत देते हैं। प्रत्येक भारतीय नागरिक से यह आशा की जाती है कि वह आर्थिक जीवन एवं अपने आसपास होने वाले परिवर्तनों को समझें। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से ही भारत आर्थिक क्षेत्र में आश्चर्यजनक परिवर्तनों से गुजर रहा है। प्रारंभिक वर्षों में केंद्र एवं राज्य दोनों सरकारों ने वृहत उद्योगों की स्थापना, संरचनागत निर्माण यथा सड़क, अस्पताल, स्कूल, परिवहन सेवा – यथा रेलवे, हवाई परिवहन सेवा, बस परिवहन निगम, आदि की स्थापना के प्रयास किए तथा निजी क्षेत्रों को विदेशी प्रतियोगिताओं से संरक्षण देकर तथा उनके जीवन एवं विकास को सुनिश्चित कर समर्थन दिया। 1990 में इस उपागम में परिवर्तन आया। निजी क्षेत्रों को वृहत उद्योग की स्थापना के लिए स्वतंत्रता मिल गई।सरकार ने बहुत सारे आर्थिक क्रियाकलापों से स्वयं को अलग करना शुरू किया। सरकारी कंपनियों को निजी क्षेत्र की कंपनियों में बदला जाने लगा। भारत विश्व में निजी क्षेत्र की व्यवस्था वाला सबसे बड़ा देश है। बहुत सारे कार्यकलाप जिन्हें कि पहले नहीं बेचा गया था, बाजार में सेवा के रुप में उपलब्ध नहीं हैं। उदाहरण के तौर पर बहुत पहले सरकार पीने का पानी उपलब्ध कराती थी और आज पीने के पानी का व्यापार अरबों रुपए का है। विविध क्षेत्रों में काम कर रहे विद्वानों तथा शैक्षिक नीति सम्बन्धी दस्तावेज विद्यालय में विभिन्न विषयों के पढ़ाए जाने के पक्ष में तर्क देते हैं। उदाहरण के तौर पर राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2005, एन.सी.ई.आर.टी. के द्वारा लाया गया जिसमें कक्षा 9 एवं 10 में अर्थशास्त्र पढ़ाने के लिए निन्नलिखित उद्देश्यों की बात की गई है:

- जीवन को जीने के लिए उन क्रियाकलापों की श्रृंखला, जिनमें कि मनुष्य शामिल है का पता लगाने में विद्यार्थियों को सक्षम करना;
- अर्थशास्त्र के मानकीकृत प्रकृति एवं जीवन में आर्थिक नीतियों की भूमिका को समझने में विद्यार्थियों की सहायता करना;
- यह जानने में सक्षम करना कि आर्थिक समस्याएँ विविध दृष्टिकोण से देखी जा सकती हैं एवं देखी जानी चाहिए;
- विद्यार्थी को विश्लेषणात्मक कौशल प्राप्त करने एवं दृष्टिकोण विकसित करने के लिए तैयार करना; तथा
- लैंगिक समस्याओं के प्रति विद्यार्थी को संवेदनशील बनाना।

कक्षा 11 एवं 12 में विद्यार्थी अर्थशास्त्र का एक वैकल्पिक विषय के रूप में अध्ययन करते हैं। विद्यार्थियों को व्यष्टि अर्थशास्त्र, समष्टि अर्थशास्त्र, विकासात्मक अर्थशास्त्र, अंतर्राष्ट्रीय व्यापार, भारत एवं भारत के विभिन्न राज्यों के आर्थिक समस्याओं, आदि से अवगत कराया जाता है। इस स्तर पर अर्थशास्त्र शिक्षण के निम्नलिखित उद्देश्य हैं:

- अर्थशास्त्र के कुछ सामान्य संप्रत्य को समझने, एवं आर्थिक तर्कशक्ति जिसे की विद्यार्थी अपने दैनिक जीवन में एक नागरिक, उपभोक्ता, एवं कर्मचारी के रूप में प्रयोग कर सकता है, को विकसित करने में विद्यार्थियों की सहायता करना;
- राष्ट्र के निर्माण में अपनी भूमिका को समझने में विद्यार्थियों की सहायता करना तथा उन्हें आर्थिक समस्याओं, जिनका कि राष्ट्र दिन–प्रतिदिन सामना कर रहा है के प्रतिसंवेदनशील बनाना;

- विद्यार्थियों को अर्थशास्त्र के सामान्य उपकरण तथा सांख्यिकी एवं आर्थिक समस्याओं के विश्लेषण करने की शक्ति से सुसज्जित करना; तथा
- विद्यार्थियों में समझ विकसित करना ताकि वे किसी भी आर्थिक समस्या के प्रति एक से ज्यादा दृष्टिकोण प्रस्तुत कर सके एवं उन पर तार्किक रूप से विमर्श कर सकें।

अनेक अंतर्राष्ट्रीय बोर्ड भारतीय विद्यालयों में अर्थशास्त्र के पाठ्यक्रम संचालित करते हैं। उदाहरण के तौर पर, इंटरनेशनलबा कालाउरेइते अर्थशास्त्र मेंडिप्लोमा कार्यक्रम, जोकि भारतीय उच्चतर माध्यमिक स्तर के समतुल्य है, संचालित करती है अर्थशास्त्र शिक्षण के निम्नलिखित उद्देश्य बताती हैं'

- मानव अनुभव एवं व्यवहार, भौतिक, आर्थिक एवं सामाजिक वातावरण एवं आर्थिक तथा सामाजिक एवं सांस्कृतिक संस्थानों के विकास के व्यवस्थित एवं क्रमिक अध्ययन हेतु प्रोत्साहित करने के लिए;
- सिद्धांतों, संप्रत्ययों तथा व्यक्ति एवं समाज के कार्यकलाप के संबंध में तर्कों को पहचानने, आलोचनात्मक रुप से विश्लेषण करने एवं मूल्यांकन करने की क्षमता विकसित करना;
- समाज के अध्ययन में प्रयुक्त किए जाने वाले आँकड़ों के संग्रह, वर्णन एवं विश्लेषण करने, उपकल्पनाओं का परीक्षण करने, जटिल आँकड़ों एवं स्रोत सामग्रियों का विवेचन करने में विद्यार्थियों को सक्षम करना;
- इस बात के अनुमोदन कि, विद्यार्थी जिस समाज में रहता है एवं अन्य समाज की संस्कृतियों दोनों के लिए अधिगम आवश्यक हैं, को प्रोत्साहित करना;
- मानव अभिक्षमता एवं विश्वास अत्यंत विविध है एवं समाज के अध्ययन की आवश्यकता है कि इन विविधताओं की प्रशंसा की जाए, इस धारणा के प्रति विद्यार्थियों में जागरुकता विकसित करना; तथा
- विद्यार्थियों को इस बात में सक्षम करना कि अर्थशास्त्र की विषयवस्तु एवं विधि प्रतियोगिता योग्य है एवं उनके अध्ययन अनिश्चितता को सहन करने की मांग करता है।

अर्थशास्त्र के पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तक की विषयवस्तु पाठ्यक्रम सम्बन्धी इन्हीं उद्देश्यों पर आधारित होती है। शिक्षकों से यह आशा की जाती है कि वह पाठ्यक्रम संबंधित सामग्रियों का उपयोग, इन उद्देश्यों को अनुभूत करने में विद्यार्थियों की सहायता करने के लिए करें। उदाहरण के तौर पर 'गरीबी' जैसे शीर्षक का अध्यापन करते समय हम गरीबी को समझने की वैज्ञानिकविधि, अर्थव्यवस्था में गरीबीस्तर को कम करने के लिए सरकार द्वारा उठाए गए कदम के आलोचनात्मक विश्लेषण के लिए तथा गरीबों के साथ संवेदनशीलता विकसित करने के लिए हम विद्यार्थियों की सहायता कर सकते हैं। पाठ योजना का निर्माण करते समय इन उद्देश्यों को अस्पष्ट रूप से एवं स्पष्ट रुप से दोनों तरीके से लिखना आवश्यक है।

ck/k Á'u

fVIi.kh क) अपने उत्तरों को दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए।

ख) अपने उत्तरों को इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाइए।

8) अर्थशास्त्र शिक्षण के उद्देश्य क्यों आवश्यक हैं?

....

....

9) राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2005 तथा आइबी (इंटरनेशनल बाकालाउरेइते) द्वारा अर्थशास्त्र शिक्षण के दिए गए उद्देश्यों में क्या अंतर है?

....

....

....

....

....

10) नीचे अर्थशास्त्र पाठ्यक्रम के शीर्षकों एवं पाठ्यक्रम सम्बन्धी उद्देश्य की एक सूची दी गई है। शीर्षक का उद्देश्य के साथ मिलान करें। एक उद्देश्य सिर्फ एक ही शीर्षक के साथ मिल सकता है।

'kh"kd ikB;Øe mís’;

1)	खाद्य सुरक्षा	(क)	आर्थिक नीतियों को समझना
2)	निजीकरण	(ख)	मूलभूत आर्थिक संप्रत्यय को समझना
3)	भारतीय अर्थव्यवस्था के तीन क्षेत्र	(ग)	विविध दृष्टिकोण को समझना
4)	सकल घरेलू उत्पाद	(घ)	मूलभूत आर्थिक उपकरणों से सुसज्जि करना
5)	उपभोक्ता अधिकार	(ङ)	सांख्यिकी के मूलभूत उपकरणों से सुसज्जि करना
6)	गरीबी	(च)	विश्लेषणात्मक कौशल विकसित करना
7)	उत्पादन के कारक	(झ)	भारतीय चुनौतियों की समझ

....

....

....

....

9-5 vFk’kkL= f'k{kk vf/kxe dh fof/k;k

अर्थशास्त्र के शिक्षण में शिक्षक के पास अपने दैनिक जीवन से विविध प्रकार के उदाहरणों को प्रस्तुत करने का अवसर होता है। अर्थशास्त्र के विभिन्न शीर्षकों को पढ़ाने के लिए विभिन्न उपागमों का प्रयोग किया जा सकता है।

9-5-1 0;k[;ku

अल्बर्ट कामू ने कहा है – "कुछ लोग नींद में बातें करते हैं। व्याख्यान तब बात करता है जब लोग सोते हैं"। यद्यपि पूरे विश्व में व्याख्यान विधि की आलोचना हुई है फिर भी अर्थशास्त्र शिक्षण के लिए शिक्षकों द्वारा प्रयोग में लाई जाने वाली यह मुख्य विधि है। व्याख्यान का प्रयोग सूचनाओं के एक समूह को श्रोताओं के एक विशेष वर्ग तक संप्रेषित करने के लिए किया जाता है। व्याख्यान देने की योजना बनाने वाले शिक्षक सामान्यतः कक्षा में कुछ नोट्स के साथ, जिसमें की विषय्वस्तु का संक्षिप्त या विस्तृत वर्णन होता है, लेकर आते हैं। इसका आशय यह भी है शिक्षक को भी प्रस्तावित पाठ्यपुस्तकों का

अध्ययन करना पड़ता है, अन्य सामग्रियों को बताना है तथा नोट्स बनना पड़ता है अर्थात सूचनाओं का प्राथमिकीकरण कर तार्किक क्रम में लिखना पड़ता है। यह निश्चित करना पड़ता है कि प्रत्येक शीर्षक एवं उपशीर्षक के अंतर्गत क्या पढ़ना है।

महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में शिक्षक के व्याख्यान की अवधि लंबी होती हैं। विद्यालयों में शिक्षक 35 से 45 मिनट का व्याख्यान देते हैं। विद्यालय में व्याख्यान विधि का आशय होता है शिक्षक के बात करने की अवधि विद्यार्थी से ज्यादा होती है। अर्थशास्त्र के व्याख्यान में नीरसता को नजरअंदाज करने के लिए शिक्षक विद्यार्थियों को प्रश्न पूछने, पाठ्य पुस्तकों के अतिरिक्त समाचारपत्र के लेखों, प्रतिवेदन, आदि को काटकर कक्षा में प्रस्तुत करने के लिए प्रोत्साहित करता है। आजकल शिक्षक व्याख्यान देने के लिए पावरप्वाइंट प्रस्तुतीकरण का प्रयोग कर रहे हैं। पावरप्वाइंट आधारित प्रस्तुततीकरण श्यामपट्ट पर लिखने में लगने वाले समय की बचत करता है। व्याख्यान को प्रभावपूर्ण ढंग से प्रस्तुत करने के लिए स्मार्ट बोर्ड का भी प्रयोग किया जा रहा है। विद्यार्थियों का ध्यान शिक्षक की आवाज और श्यामपट्ट या एल.सी.डी. स्क्रीन पर जो दिखाया जा रहा है के बीच घूमता रहता है। पावरप्वाइंट आधारित व्याख्यान में विद्यार्थी के अवधान में पर्याप्त विचलन भी होता है।

9-5-2 ifjppk

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2005 ने यह सुझाया है कि – हमें पाठ्यपुस्तक का ज्ञान तथा पाठ्यक्रम को कक्षाकक्ष एवं विद्यालय के बाहर के जीवन से संबंधित करना चाहिए। परिचर्चा राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2005 के उद्देश्यों कोप्राप्त करनेकी एक महत्वपूर्ण विधि है। अर्थशास्त्र के अनेक शीर्षक विद्यार्थियों को परिचर्चा के दौरान अपने जीवन अनुभव को साझा करने का अवसर प्रदान करते हैं।

परिचर्चा विद्यार्थियों की सहायता उनके खुद की मान्यताओं एवं ज्ञान के आलोचनात्मक परीक्षण करने में करती है। परिचर्चा का संचालन करने वाले शिक्षक विद्यार्थी के तर्कों पर ध्यान देते हैं, उनमें होने वाले सामान्य त्रुटियों संकेतित करते हैं तथा सरल एवं उच्च स्तर के तर्क को पहचानने में विद्यार्थी की सहायता करते हैं। जब विद्यार्थियों द्वारा विषयों पर पर्याप्त मात्रा में चर्चा हो जाते है तब शिक्षक यह पहचान करता है कि कौन विद्यार्थी पहले ज्यादा विस्तृत जानकारी दे सकता है तथा कक्षा को बता सकता है। सभी विद्यार्थियों को बोलने के लिए प्रोत्साहित करने के बजाय शिक्षक ऐसे विद्यार्थियों को कक्षा में बोलने का अवसर देता है जिनकी वह पहचान करता है। जब विद्यार्थी का परिचर्चा विचारविमर्श पर एकाधिकार हो जाता है तो शिक्षक हस्तक्षेप करता है।

कक्षा में विद्यार्थियों की संख्या अधिक होने पर शिक्षक उन्हें दो विद्यार्थियों के युग्म में, किसी एक प्रश्न पर 5 मिनट के लिए परिचर्चा करने के लिए, बाँट देता है। उसके बाद पूरी कक्षा को परिचर्चा में एक साथ शामिल करता है। इससे प्रत्येक विद्यार्थी को सहभाग करने का एवं अपने विचारों को दूसरे विद्यार्थी के विचारों के साथ प्रदर्शित करने का अवसर मिलता है। कुछ शिक्षक परिचर्चा को कई चक्रों में आयोजित करते हैं। प्रथम चक्र की परिचर्चा के लिए दो–दो विद्यार्थियों का समूह बनाते हैं और प्रत्येक नई समस्या या उदाहरण के लिए विद्यार्थियों के युग्मन को परिवर्तित कर देते हैं। इस विधि का एक अन्य रूप पिरामिड जैसी संरचना बनाकर परिचर्चा का आयोजन है। इसमें पहले चक्र में 2 विद्यार्थियों का समूह होता है। इसके बाद 4 विद्यार्थियों का समूह उसी विषय पर परिचर्चा करने के लिए गठित किया जाता है। इसके बाद 8 विद्यार्थियों का समूह होता है। समस्त कक्षा को परिचर्चा में शामिल करने के लिए इसका आयोजन इसी प्रारुप में किया जा सकता है। यह रूपरेखा तब उपयोगी होता है जब परिचर्चा के विषय के अनेक स्तर होते हैं। सामान्यतः अधिक जटिल विषयों पर छोटे समूह में परिचर्चा की जाती है। समस्त कक्षा को समूह मानकर आयोजित की जाने वाली परिचर्चा में विद्यार्थी अपनी प्रतिक्रियाओं पर चर्चाकर सकते हैं, अपने नए विचारों को साझाकर सकते हैं और परिचर्चा के दौरान प्रत्येक विद्यार्थी द्वारा अभिव्यक्त किए गए विचारों को और समृद्ध कर सकते हैं।

समस्त कक्षाकक्ष परिचर्चा में जब विद्यार्थी कोई दावा करता है शिक्षक उससे उसके दावे के सम्बन्ध में साक्ष्य या तर्क माँगता है तथा पूरी कक्षा से उस साक्ष्य या तर्क का मूल्यांकन करने के लिए कहता है। वे कुछ समय तक बात करते हैं तथा उस विद्यार्थी को जोकि असहमत है असहमति के कारण बताने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। शिक्षक विद्यार्थियों को एक–दूसरे से बात करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। वह न तो अपना खुद का योगदान देते हैं न ही किसी के पक्ष में अपना तर्क रखते हैं। वे विद्यार्थियों को परिचर्चा में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

किशोर विद्यार्थी किसी विषय पर चर्चा करते समय भावात्मक रुप से उस विषय से जुड़ा रहता है। यदि शिक्षक को इस बात का आभास होता है कि परिचर्चा दिशाहीन हो गई है या अनुत्पादक है तब वह हस्तक्षेप करता है। यदि यह व्यक्तिगत हो जाता है शिक्षक कक्षा पर पुनः ध्यान केंद्रित कर सकता है और परिचर्चा को लिखित कार्य के रूप में परिवर्तित कर सकता है।

9-5-3 leL;k vk/kkfjr vf/kxe

समस्या आधारित अधिगम में अर्थशास्त्र शिक्षक विद्यार्थियों के प्रत्येक समूह के सामने एक समस्या रखता है एवं उसका समाधान खोजने में उनकी सहायता करता है। सन् 1960 के दशक में चिकित्सा, स्वास्थ्य सेवा एवं शिक्षा के क्षेत्र में इसका प्रयोग किया जाता था। अब इसका प्रयोग अन्य विषयों में भी व्यापक रुप से होने लगा है। विद्यार्थी जो समाधान लेकर आते हैं और उस समाधान तक पहुँचने में वह जिन प्रक्रिया का पालन करते हैं वे सभी उनके अधिगम का हिस्सा होते हैं।

इस बात को ध्यान में रखना चाहिए कि राष्ट्रीय स्तर के आर्थिक मुद्दों की प्रकृति विद्यालय स्तर के विद्यार्थियों के लिए सरल नहीं होती है ताकि वे उनका समाधान ढूँढ सके। यहाँ तक कि एक व्यक्ति के लिए भी इनका समाधान ढूँढ़ना चुनौती पूर्ण कार्य हो सकता है। उदाहरण के तौर पर, एक विद्यार्थी यह पाता है कि उसके परिवार की आय अत्यंत ही कम है। वह आसानी से अपने परिवार की आय की समस्या का समाधान, जोकि परिवार के सदस्य द्वारा उच्च आय वाले नौकरी में लग जाना है जिसे कि प्राप्त करना आसान नहीं है, को आसानी से नहीं ढूँढ़ पाता है। समस्या का विश्लेषण करना एवं उसके कारण एवं परिणाम को समझने की कोशिश करना पर्याप्त है। समस्या आधारित अधिगम विद्यार्थियों को विविध सामग्रियों पर शोध करने एवं अनुसंधान की उचित दिशा तथा रूपरेखा विकसित करने का अवसर प्रदान करता है ताकि वे समाधान प्राप्त कर सकें। इस विधि में विद्यार्थी अधिगम प्राप्त करने में शामिल जटिलताओं, सामाजिक–ऐतिहासिक राजनैतिक तथा भौगोलिक मुद्दों को समझने की आवश्यकता को जान पाता है। यह उपागम आर्थिक मुद्दों पर आधारित पाठ्यक्रम के लिए उपयोगी है लेकिन आर्थिक सिद्धांतों को पढ़ाने के लिए उपयुक्त नहीं है।

9-5-4 vFkZ'kkL= esa vu:i.k [ksy

अनुरूपण खेल शिक्षकों एवं विद्यार्थियों को आर्थिक सिद्धांतों को रियालिटी–शो जैसी परिस्थिति का उपयोग करके समझने का अवसर देती है। अनुरूपण खेल में विद्यार्थी खिलाड़ी की तरह शामिल होते हैं और सक्रिय रुप से अपना खेल खेलते हैं। इसकी कुछ संरचनात्मक आवश्यकताएँ, यथा, खेलने के लिए स्थान, अनुपालन किए जाने वाले नियम, खेल खेलने के लिए सामग्री, खिलाड़ी आदि होती हैं। अभी इस खेल में कुछ जीतने वाले एवं कुछ करने वाले हो सकते हैं।

अनुरूपण खेल विद्यार्थियों को आर्थिक संप्रत्ययों को समझने में सहायता करने के लिए खेला जाता है। आर्थिक संप्रत्यय अनेक प्रकार के आर्थिक क्रिया–कलापों जिन्हें कि व्यक्तिगत रूप से या समूह में व्यक्तियों के समूह द्वारा संपादित किया जाता है से संबंधित हैं। अर्थशास्त्री वास्तविक परिस्थितियों को अनुरुपित करने वाले खेलों का विकास करते हैं। खेलों का विकास करने वाले यह सुझाव देते हैं कि एक खेल में निम्नलिखित सोपानों को शामिल किया जाना चाहिएः

1) *'kf{kd mís';k dk xBu* – कौन से आर्थिक संप्रत्यय को सीखा जाना है इसकी स्पष्ट पहचान कर लेनी चाहिए। कुछ खेलों में एक से ज्यादा संप्रत्यय शामिल होते हैं उनको सूचीबद्ध करना आवश्यक है।

2) *[ky dh ;kstuk* – जिसमें की नियमों का निश्चयीकरण, समूहों का गठन, प्रत्येक समूह में विद्यार्थियों की संख्या, प्रत्येक समूह के सदस्यों की भूमिका, आवश्यक सामग्री तथा फर्नीचर की व्यवस्था आदि शामिल है, बना ली जानी चाहिए।

3) *f’k{kd dh Hkfedk* – यद्यपि आर्थिक खेलों में भौतिक खेलों की भाँति अंपायर की भूमिका नहीं होती है। भौतिक खेलों की भाँति तथा पी.टी. शिक्षक को समस्त खेल की व्यवस्था करनी चाहिए, पूर्व में योजना बनानी चाहिए, अनुमानित बजट निर्धारित करना चाहिए, आवश्यक समय निर्धारित करना चाहिए, आवश्यक सामग्रियों की व्यवस्था की जानी चाहिए, खेल में भाग लेने वाले प्रत्येक विद्यार्थियों की भूमिका सुनिश्चित की जानी चाहिए, खेल के नियमों की व्याख्या खिलाड़ियों को प्रदान की जानी चाहिए, परिणाम को लिखा जाना चाहिए यदि कोई स्पष्टता आवश्यक हो तो हस्तक्षेप करना चाहिए।

4) खेल के बाद की जानकारी हेतु उसकी संक्षिप्त चर्चा की जानी चाहिए। इस समय शिक्षक विद्यार्थियों को वापस अधिगम उद्देश्य को याद दिलाता है तथा संप्रत्यय पर आधारित प्रश्न पूछता है।

इंटरनेट पर ऐसे कई खेल हैं और इनमें से कई को ऑनलाइन खेला जाता है आजकल युवाओं द्वारा एक ऐसा ही अनुरुपित खेल मोनोपोली द्वारा बहुत खेला जाता है शिक्षक खेल की पहचान कर सकता है एवं पढ़ाये जाने वाले संप्रत्यय के अनुसार उसमें सुधार कर सकता है।

9-5-5 lçR;; ekufp= d| }kjk vf/kxe

हम सामान्यतः अंतर्निर्भर हैं। समाज विज्ञान के संप्रत्यय की आवश्यकता हम जिस समाज में रहते हैं उसको समझना है। विभिन्न संप्रत्ययों के बीच सम्बन्ध विभिन्न प्रकार के हो सकते हैं। संप्रत्यय मानचित्र इन सम्बन्धों को रेखाचित्र के रुप में व्यवस्थित एवं वर्णित करने में सहायता करता है। संप्रत्यय मानचित्र में संप्रत्यय वृत या आयताकार खानों में बंद रहता है तथा संप्रत्ययों के मध्य सम्बन्ध सम्पर्क सरल संपर्क रेखा या त्रियक संपर्क रेखा द्वारा प्रदर्शित किया जाता है। सम्बन्धों की प्रकृति का वर्णन करने के लिए संपर्क रेखा पर यांत्रिक संपर्क रेखा पर शब्द प्रदर्शित होते हैं। संप्रत्यय मानचित्र पादानुक्रमिक रुप में प्रस्तुत किया जाता है जिसमें सर्वाधिक सामान्य संप्रत्यय सबसे ऊपर होता है। पदानुक्रम का क्रम प्रश्न का उत्तर देने के लिए आवश्यक सम्बन्ध की प्रकृति पर निर्भर करता है। कक्षा 12 के एक शीर्षक राष्ट्रीय आय अंकेक्षण पर आधारित निम्नलिखित संप्रत्यय मानचित्र को देखें।

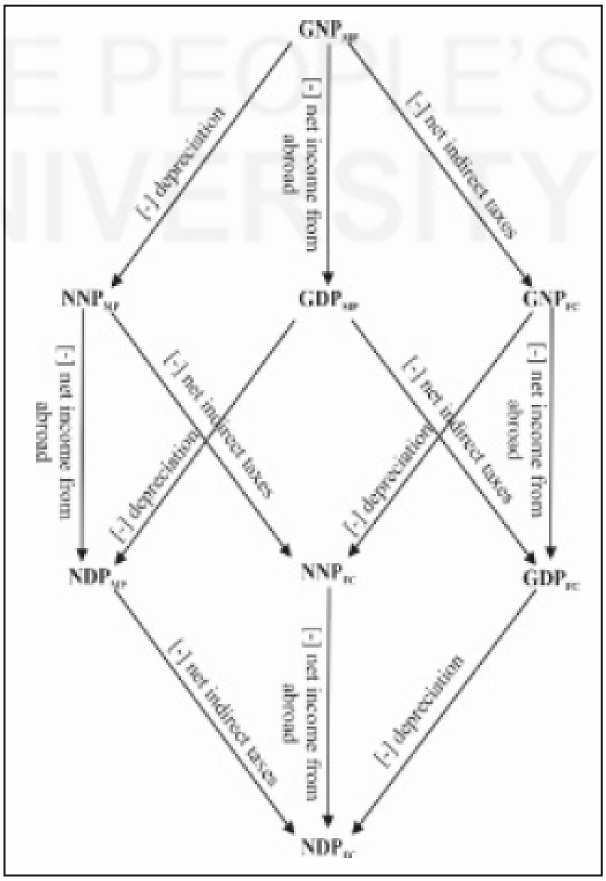

संप्रत्यय मानचित्र की पहली आवश्यकता एक प्रश्न का निर्माण करना है। इसके बाद उस प्रश्न के उत्तर के लिए आवश्यक संप्रत्यय या संप्रत्ययों की पहचान की जाती है एवं उन्हें सूचीबद्ध किया जाता है। संप्रत्यय पर चर्चा करते समय विद्यार्थी अपने वास्तविक जीवन एवं पाठ्यपुस्तकों से अनेक उदाहरण प्रस्तुत करता है, विविध संप्रत्ययों के मध्य अनेक सम्बन्धों को सुझाता है। यह आर्थिक संप्रत्ययों को बेहतर रूप से समझने में उनकी सहायता करता है।

9-5-6 ifj;ktuk

अर्थशास्त्र विद्यार्थियों को परियोजना कार्य प्रदान करने का पर्याप्त अवसर प्रदान करता है। परियोजना कार्य के लिए विद्यार्थियों द्वारा विषय शिक्षक के निर्देशन में अनुसंधान आवश्यक होता है। यह विद्यार्थियों की कई रूपों में सहायता करता है। यहाँ तक कि यह विद्यालयी शिक्षा समाप्त करने के बाद भी सहायता करता है। विद्यार्थी पाठ्यपुस्तक में पाठ्यक्रम के भाग के रूप में विविध शीर्षकों को पढ़ता है। परियोजना कार्य विद्यार्थियों को एक विशिष्ट आर्थिक प्रश्न या मुद्दे जिनमें कि उनकी रुचि होती है पर कार्य करने में प्रशिक्षित करता है।उन के लिए उन के लिए यह आवश्यक होता है कि वे एक अर्थशास्त्री की तरह सोचें एवं अनुसंधान करें, प्रश्न एवं प्रश्नावली विकसित करें, आँकड़ों का संग्रह करें एवं उनका विश्लेषण करें एवं विशिष्ट आर्थिक प्रश्न का उत्तर प्राप्त करने के लिए लिए अनुसंधान करें। परियोजना कार्य विद्यार्थियों को आलोचनात्मक चिंतन सिखाता है। परियोजना कार्य विभिन्न विषयों, जिनमें कि गणित एवं भाषा भी शामिल है, में सीखे गए कौशलों के अनुप्रयोग का अवसर प्रदान करता है। परियोजना कार्य कक्षाकक्ष के बाहर भी, कंप्यूटर का प्रयोग करके, लोगों से बातचीत करके, आँकड़ों का संग्रह करके तथा अपने समूह के सदस्यों के साथ विचार–विमर्श करके, कौशलों को सीखने में सहायता करते हैं। शिक्षक का निर्देशन एक नियमित अंतराल पर शोध सम्बन्धी कौशलों को अर्जित करने में विद्यार्थियों की सहायता करता है। विद्यार्थी संप्रेषण एवं प्रस्तुतीकरण कौशल, जोकि पारंपरिक परीक्षा प्रणाली में नहीं विकसित हो सकता है, का भी विकास परियोजना विधि में करता है।

9-5-7 {k= Hkze.k

अर्थशास्त्र शिक्षक विद्यालय पाठ्यक्रम के रूप में विभिन्न उद्देश्यों के लिए क्षेत्र भ्रमण को प्रोत्साहित करते हैं। शीर्षक यथा अधिक शोषण (बैंकिंग), रोजगार, कृषि, बाजार, आदि को क्षेत्र भ्रमण के माध्यम से बेहतर ढंग से पढ़ाया जा सकता है। क्षेत्र भ्रमण विद्यालय से बाहर, घर, दुकान तथा अन्य संस्थानों, आदि में आँकड़ों के संग्रहण के लिए किया जाता है। क्षेत्र भ्रमण विद्यार्थियों की, यह समझने में कि कैसे आर्थिक कियाकलाप संपादित किए जाते हैं, सहायता करता है।

9-5-8 vkdMk dk fo'yi"k.k ,o foopu

अर्थशास्त्र में पूछे गए प्रश्न घरों एवं व्यापारिक प्रतिष्ठानों से इकट्ठा किए गए आँकड़ों के आधार पर समझे जाते हैं एवं उनका समाधान किया जाता है। तालिका 9.1 को देखें। इस प्रकार के आँकड़े अर्थशास्त्र के मुख्य विषयवस्तु का गठन करते हैं।

rkfydk 9-1% Hkkjrh; vFk0;oLFkk d çe[k l dr d

l dr d	2012&13	2013&14	2014&15	2015&16
सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) वृद्धि(:)	5.6	6.6	7.2	7.6
विद्युत निर्माण क्षमता में वृद्धि(:)	4.0	6.0	8.4	4.4
सकल घरेलू उत्पाद के प्रतिशत के रूप में राजकोषीयघाटा	4.9	4.5	4.0	3.9
निर्यातवृद्धि(:)	–1.8	4.7	–1.3	17.6
आयात वृद्धि(:)	0.3	–8.3	–0.5	–15.5

lkr% आर्थिक सर्वेक्षण 2015–16, अंक–2, भारत सरकार,पृष्ठ–2।

अर्थशास्त्र के विद्यार्थी से यह आशा की जाती है कि वह इस बात को समझें कि कैसे इस प्रकार के आँकड़े एकत्रित किए जाते हैं और ये आँकड़े आर्थिक विकास के संदर्भ में क्याबताते हैं? आर्थिक आँकड़े भिन्न–भिन्न प्रकार के होते हैं। यथा – अंतरर्नुशासनिक आँकड़े, कालश्रेणी आँकड़े, गुणात्मक एवं संख्यात्मक आँकड़े, आदि। आँकड़ा विश्लेषण में आँकड़ों को समझने एवं आर्थिक पक्ष के संदर्भ में किसी निर्णय पर पहुँचने के लिए सांख्यिकीय उपकरणों का प्रयोग किया जाता है। आँकड़ा विश्लेषण विद्यार्थियों को आर्थिक घटनाओं, जोकि अंकों के रूप में दी गई होती है,को समझने, आँकड़ों के संक्षिप्त करने, भिन्न–भिन्न आर्थिक पक्षों के मध्य सम्बन्ध के निर्माण करने, उसको समझने तथा पहचानने एवं विविध आर्थिक चरों की तुलना करने में सहायता करता है। शिक्षण कार्य करते समय अर्थशास्त्र शिक्षक विविध प्रकार के आँकड़ों का प्रयोग करता है, उनका विश्लेषण करता है एवं अपने परिणामों का विवेचन करता है।

9-5-9 lkFkh ,o lg;kxh f’k{k.k fof/k

इन विधियों में विद्यार्थियों को अर्थशास्त्र सीखने के लिए अधिक स्वतंत्रता दी जाती है। ये विधियाँ यह मानती है कि ज्ञान एक सामाजिक अवधारणा है एवं शिक्षक विद्यार्थियों को ज्ञान को खुद अविष्कृत करने में सहायता करता है। सहयोगी अधिगम विधि में विद्यार्थी छोटे–छोटे समूहों में विशिष्ट आर्थिक मुद्दों से संबंधित संप्रत्ययों के ऊपर चर्चा करते हैं। उनका समाधान ढूंढते हैं एवं उनके प्रति अपनी समझ विकसित करते हैं। साथी अधिगम सहयोगी अधिगम विधि का ही एक रुप है जिसमें संप्रत्यय की समझ विकसित करने के लिए विद्यार्थी अपने ही उम्र एवं आयु वर्ग एवं कक्षा के विद्यार्थियों के साथ चर्चा करता है।

9-5-10 nLrkost fo'ys"k.k

यद्यपि इस कार्यकलाप का व्यापक रुप से प्रयोग इतिहास जैसे विषय में किया जाता है तथापि आधुनिक समय में विद्यार्थियों से आशा की जाती है कि वह अधिकारिक दस्तावेजों, यथा – आर्थिक सर्वेक्षण, भारतीय जनगणना प्रतिवेदन, मानव विकास प्रतिवेदन एवं बजट प्रतिवेदन आदि को समझने के लिए इस कार्यकलाप का प्रयोग करें। इन प्रतिवेदनों में से अधिकांश का प्रकाशन वार्षिक होते हैं। अर्थशास्त्र का विद्यार्थी प्रतिवेदन में वर्णित आँकड़ों पर अंतर्सूझ प्रकट करने वाल पहला व्यक्ति होना चाहिए।

cks/k Á’u

fVIi.kh% क) अपने उत्तरों को दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए।

ख) अपने उत्तरों को इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाइए।

11) कैसे व्याख्यान विधि परिचर्चा विधि से भिन्न हैं?

....

....

....

....

....

....

....

....

12) निम्न तालिका में अर्थशास्त्र के कुछ शीर्षक है। इनको पढ़ाने के लिए आप जिन विधियों का प्रयोग करेंगे, उन्हें लिखें।

Øe l[;k	'kh"kd fof/k
1)	माँग का सिद्धांत
2)	सकल घरेलू उत्पाद का अनुमान
3)	सूचकांक
4)	गरीबी का मापन
5)	वैश्वीकरण
6)	उपभोक्ता अधिकार?

....

....

....

....

....

13) क्षेत्र भ्रमण सिर्फ इतिहास जैसे विषय के लिए उपयोगी है क्या आप इस कथन से सहमत हैं व्याख्या करें।

....

....

....

....

9-6 f'k{k.k vf/kxe lalk/ku

9-6-1 ikB;iqLrd

भारत में अधिक ांश विद्यार्थियों एवं शिक्षकों के लिए पाठ्यपुस्तक मुख्य शिक्षण –अधिगम सामग्री है। अर्थशास्त्र के पाठ्यपुस्तक अन्य विषयों के पाठ्यपुस्तकों से भिन्न होते हैं। यह विद्यार्थियों को संप्रत्ययों की आधारभूत समझ प्रदान करते हैं। पाठ्यपुस्तक गाइड से, जो कि सिर्फ प्रश्नों के उत्तर प्रदान करते हैं, भिन्न होते हैं। पाठ्यपुस्तकों के विषयवस्तु विषय की आवश्यकताओं, विद्यार्थियों की आयु, उनके स्तर एवं मानसिक योग्यता को ध्यान में रखते हुए व्यवस्थित किए जाते हैं। परीक्षा बोर्ड द्वारा प्रस्तावित की गई पुस्तकों या सरकारी संस्थानों द्वारा लिखी गई पाठ्यपुस्तकों का परीक्षा के उद्देश्य से बेंचमार्क के रूप में प्रयोग किया जाता है। बोर्ड परीक्षाओं में प्रश्न एवं विद्यार्थियों के उत्तर की जाँच पाठ्यपुस्तक में दिए गए तथ्यों के आधार पर किया जाता है। पाठ्यपुस्तक शिक्षकों के लिए बेंचमार्क की तरह कार्य करते हैं। उदाहरण के तौर पर अर्थशास्त्र पाठ्यक्रम में "विकास" शीर्षक शामिल हो सकता है लेकिन इस शीर्षक पर लाखों पृष्ठ लिखे जा चुके हैं एवं शिक्षकों के लिए उपलब्ध है। एक पाठ्यपुस्तक में इस शीर्षक पर लिखे गए 15–20 पृष्ठ शिक्षकों की इस शीर्षक को पढ़ाने में अधिक सहायता करता है।

9-6-2 i|jd ikB; lkexh

अर्थशास्त्र के पाठ्यपुस्तकों में भिन्न–भिन्न क्षेत्रों से शीर्षक शामिल हो सकते हैं। कोई भी अर्थशास्त्र का पाठ्यपुस्तक जिसमें की अधिक संख्या में सिद्धांत एवं संप्रत्यय दिए गए हों, सिर्फ सीमित संख्या में संप्रत्ययों एवं शीर्षकों को समझने के लिए सिर्फ मूलभूत संरचना प्रस्तुत करता है। पूरक पाठ्यसामग्री उन विद्यार्थियों एवं शिक्षकों, जो शीर्षक के विषय में अधिक जानना चाहते हैं, की सहायता करता है। सरकारी संस्थानों यथा राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, नई दिल्ली तथा अन्य निजी प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित पाठ्यपुस्तकों पूरक पाठ्य सामग्री के कुछ उदाहरण हैं। (सहयोगी एवं संदर्भ ग्रंथ देखें)।

9-3-4 j|[kkfp= rFkk xkQ

आर्थिक सांख्यिकी अर्थशास्त्र अधिगम का एक मुख्य स्रोत है। यह मुख्यतः बड़ी तालिकाओं में उपलब्ध होते हैं। विद्यार्थी अनेक अंकों वाली तालिका की तुलना में चित्ररूप में वर्णित किसी भी विषयवस्तु को अधिक प्रभावी ढंग से समझता है। अर्थशास्त्र शिक्षक अपने सांख्यिकी के ज्ञान का प्रयोग कर इन आँकड़ों को या तालिकाओं को चार्ट के रूप में परिवर्तित कर देता है। चित्र 9.1 देखें।

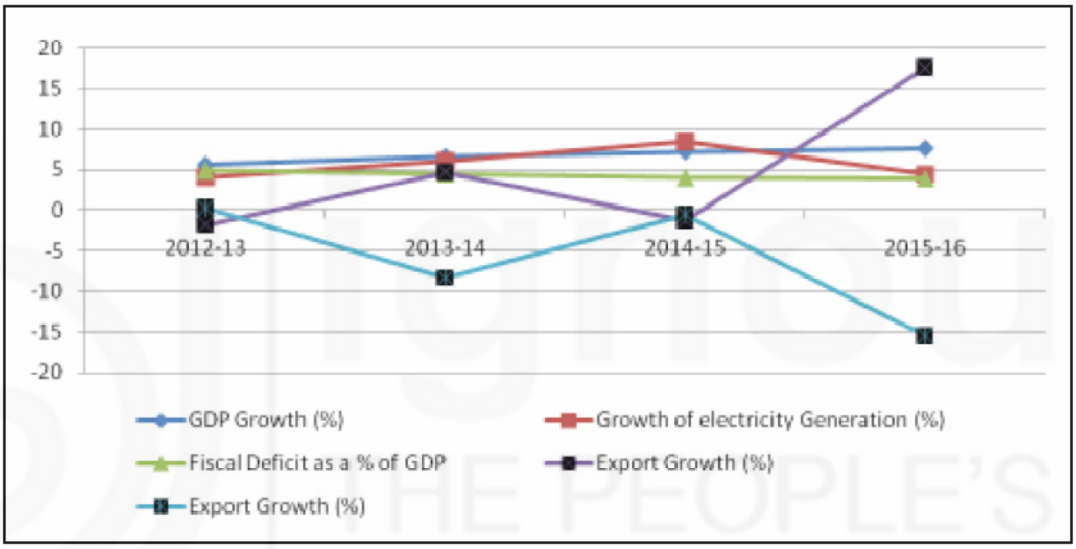

fp= 9-1 Hkkjrh; vFkO;oLFkk d| e|[; l|d|rd 2012&16A

आप देखेंगे कि चार्ट सिर्फ आँकड़ों को जानने में ही सहायता नहीं करते हैं बल्कि उनका विवेचन करने में भी सहायता करते हैं। विद्यार्थियों को आर्थिक सूचनाओं को प्रकट करने के लिए ऐसे कम्प्यूटर सॉफ्टवेयरों का प्रयोग किया जाता है जो इस प्रकार के चार्ट के निर्माण कर सके।

9-6-4 lekpkj i=] jfM;k rFkk V|yhfo tu

सरकारी एवं निजी संस्थानों के आर्थिक क्रिया–कलापों पर आधारित आर्थिक सूचनाएँ मुख्यतः समाचारपत्रों में, रेडियो तथा दूरदर्शन पर उपलब्ध रहती हैं। उदाहरण के तौर पर जब संघ सरकार योजना बनाती है एवं प्रत्येक वर्ष बजट प्रस्तुत करती है तब सभी मीडिया के लोग सरकार एवं इसकी आर्थिक नीतियों की प्राथमिकताओं को विस्तृत रूप से वर्णित करते हैं। मीडिया विभिन्न निजी कंपनियों के निष्पादन स्तरों को भी प्रतिवेदित करती है क्योंकि लोगों ने अपनी बचत का शेयर बाजार में निवेश किया होता है। शिक्षक विद्यार्थियों को आर्थिक सूचनाओं को पढ़ने के लिए, देखने के लिए एवं संग्रहित करने के लिए तथा पाठ्यपुस्तकों के संप्रत्यय को वास्तविक जीवन की अर्थव्यवस्था से संबंधित करने के लिए प्रोत्साहित करता है।

9-6-5 eYVhehfM;k lkexzh

बहुत समय से सिनेमा एवं मीडिया विद्यार्थियों के लिए अतिरिक्त संसाधन रहे हैं। सूचना एवं संचार तकनीकी में हुए क्रांति ने अनेक सरकारी एवं निजी संगठनों को विशिष्ट आर्थिक संप्रत्ययों पर सी.डी. एवं डी.वी.डी. के निर्माण हेतु प्रोत्साहित किया। उदाहरण के तौर पर सेंट्रल इंस्टीट्यूट ऑफ एजुकेशनल टेक्नोलॉजी, नई दिल्ली, कक्षाकक्ष में प्रयोग हेतु ऐसी मल्टीमीडिया सामग्री का निर्माण करती है। व्यक्तिगत मीडिया हाउ से सभी मल्टीमीडिया सामग्री का प्रकाशन करती है।

9-6-6 bVjuV

यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि यदि एक व्यक्ति यह कहता है कि अर्थशास्त्र अधिगम के लिए लगभग सभी वैश्विक ज्ञान इंटरनेट पर उपलब्ध हैं। पिछले 250 वर्षों में अर्थशास्त्रियों द्वारा लिखे गए महत्वपूर्ण पुस्तकें डिजिटल रूप में उपलब्ध हैं। अधिकांश पाठ्पुस्तकें अब कठोर (हार्ड) एवं मृदु (सॉफ्ट) दोनों रूपों में प्रकाशित हो रही हैं। इंटरनेट अर्थशास्त्र अधिगम का एक मुख्य स्रोत बन गया है। इंटरनेट पर न सिर्फ लिखित सामग्री उपलब्ध होती है बल्कि मल्टीमीडिया सामग्री, व्याख्यान, अर्थशास्त्रियों की बातचीत आदि भी उपलब्ध होती हैं। सभी आर्थिक नीतियों के दस्तावेज इंटरनेट पर उपलब्ध हैं। सांख्यिकी एवं सरकारी संस्थानों के प्रतिवेदन इंटरनेट पर उपलब्ध हैं। अधिकांश निजी कंपनियाँ अपना ब्योरा इंटरनेट पर देती है। वास्तव में अर्थशास्त्र शिक्षक की भूमिका विद्यार्थियों को इंटरनेट पर उपलब्ध प्रामाणिक ज्ञान की पहचान में सहायता करने के लिए महत्वपूर्ण है।

ck/k Á'u

fVIi.kh क) अपने उत्तरों को दिए गए रिक्त स्थान में लिखिए।

ख) अपने उत्तरों को इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाइए।

14) पाठ्यपुस्तक क्यों आवश्यक हैं?

....

....

....

....

....

15) पाठ्यपुस्तक कैसे मीडिया से अलगहै?

....

....

....

....

16) अर्थशास्त्र सीखने के लिए टेलीविजन देखने के पीछे तीन कारणों को लिखें

....

....

....

....

17) पाठ्यपुस्तक एवं पूरक सामग्री पाठ्यसामग्री के बीच अंतरस्थापित करें।

....

....

....

....

....

9-8 lkjk'k

अर्थशास्त्र अर्थशास्त्रियों द्वारा विभिन्न रूपों में परिभाषित किया गया जो उनके विश्वास एवं मान्यताओं पर आधारित था। इन परिभाषाओं में निहित महत्वपूर्ण पक्ष उत्पादन, उपभोग वितरण, एवं विनिमय है। अर्थशास्त्र अधिगम की आवश्यकता विविध आर्थिक प्रतिमानों का सावधानीपूर्वक अध्ययन है। ये प्रतिमान कुछ मान्यताओं एवं गणित के प्रयोग पर आधारित हैं। शिक्षकों को अर्थशास्त्र के तीन महत्वपूर्ण पक्षों यथा 'रचना का भ्रम', 'मिथ्या सादृश्यता' तथा कार्य–कारण सम्बन्ध के प्रति सावधान रहना चाहिए। पाठ्यक्रम के उद्देश्य, भारत के राष्ट्रीय उद्देश्य तथा वैश्विक नागरिकता के उद्देश्य से लगभग मिलते–जुलते हैं। शिक्षक पढ़ाए जाने वाले शीर्षक के आधार पर शिक्षण विधि का चयन करता है। चूँकि अर्थशास्त्र हमारे दैनिक जीवन के अनेक पक्षों से संबंधित है अतः, अन्य अधिगम सामग्रियों के अतिरिक्त मीडिया हमारे अर्थशास्त्र की समझ को विकसित कर सकता है।

9-8 lnHkZ xzFk ,o mi;ksxh iBu lkexzh

भादुड़ी, अमित (2010). डेवलेपमेंट विद डिग्निटी. नई दिल्ली, नेशनल बुक ट्रस्ट।

सी.मुद्दगल, सुरेश (2014). फूड सिक्योरिटी इन इंडिया.नई दिल्ली. नेशनल बुक ट्रस्ट।

डे, विकहिल, ड्रेजे, जिन, खेरा, रितिका (2008). एंप्लॉयमेंट गारंटी एक्ट : ए प्राइमर, नई दिल्लीः नेशनल बुक ट्रस्ट।

ग्रेगरी, मानकिव (2011). प्रिंसिपल्स ऑफ इकोनॉमिक्स, सिकस्थ एडिसन, सेनगाजे लर्निंग।

एन.सी.ई.आर.टी. (2006). *इकोनॉमिक्स सोशल साइंसटेस्ट बुक फॉर क्लास ना इन* दूनई दिल्लीः नेशनल काउंसिल ऑफ एजुकेशन लरि सर्च एंड ट्रेनिंग।

अंडरस्टैंडिंग इकोनॉमिक डेवलपमेंट सोशल साइंस टेक्स्ट बुक फॉर क्लास टेन. नई दिल्लीः राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद।

पॉलसिमुलेशन तथा विलियम नॉरधस (2009) *इकोनॉमिक्स* नाइन्टींथ एडिशन, मैक–ग्रॉ हिल एजुकेशन बिजनेस न्यूज पेपर्स

बिजनेस मैगजीन्स

इकोनॉमिक एंड पोलिटिकल वीकली

बिजनेस टेलीविजन चैनल्स

वेबसाइट

www.india.budget.nic.in
www.nitiaayog.gov.in

http://nroer.gov.in
https://ideas.repec.org/
https://ruralindiaonline.org/
http://www.econlib.org
www.economicsnetwork.uk
http://serc.carleton.edu/econ/index.html
http://www.tutor2u.net

9-9 viuh Áxfr dh tkp gsrq mÙkj

1) वस्तुओं एवं सेवाओं के उत्पादन के लिए आवश्यक संसाधन प्रचुर मात्रा में नहीं है।

2) दूसरे के खेतों में मानदेय हेतु कार्य करना, श्रमिक व स्टेशनरी की दुकान में भुगतान कर कलम एवं पेंसिल खरीदना।

3) समाज विज्ञानी जो उत्पादन, वितरण, उपभोग एवं विनिमय का अध्ययन करते हैं वे प्रतिमानों एवं सिद्धांतों का प्रयोग करते हैं।

4) समाज में संचालित विविध आर्थिक घटनाओं एवं कारकों के मध्य सम्बन्धों के प्रति समझ विकसित करने में आर्थिक सिद्धांत सहायता करते हैं।

5) मान्यताएँ आर्थिक कारकों के एक समूह के प्रकार्यों को समझने की दशाएँ हैं। वे अर्थव्यवस्था में दूसरे व्यक्तियों के व्यवहारों के समूह को पहचान में सहायता करते हैं।

6) क) प्रयुक्त भाषा अधिक संक्षिप्त होती है;

   ख) तर्कशक्ति के आधार पर आधारित निर्णय लेने में सहायता करती है।

7) क) मिथ्या सादृश्यता

   ख) रचना का भ्रम

   ग) विविध आर्थिक पक्षों के मध्य कारण एवं प्रभाव सम्बन्धों की पहचान करते हैं।

8) ये उन राष्ट्रीय लक्ष्यों जिसे कि प्रत्येक देश प्राप्त करना चाहता है की तरह कार्य करते हैं। पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तकों के विकास एवं पाठ्यक्रम संबंधित क्रियाकलापों के संगठन के लिए भी उद्देश्य आवश्यक होते हैं।

9) राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा (2005) के उद्देश्य मुख्यतः राष्ट्रीय विकास के उद्देश्य की चर्चा करते हैं। जहाँ आईबी के उद्देश्य वैश्विक नागरिकता तथा अपने राष्ट्र में जीवन जीने को सिखाने के इच्छुक होते हैं।

10) 1- A & G; 2 – A & C; 3-B & F; 4 – B; 5 – C & G; 6 – A & G; 7 – B & F

10. 1 – क और झ,

 2 – क और ग,

 3 – ख और च,

 4 – ख,

 5 – ग और झ,

 6 – क और झ,

 7 – ख और ज

11) व्याख्यान विधि से शिक्षण में शिक्षक अधिक बातचीत करता है जबकि परिचर्चा विधि में शिक्षक विद्यार्थियों को अपने विचारसाझा करने के लिए प्रोत्साहित करता है।

12) 1 एवं 2 – व्याख्यान, 3 – व्याख्यान एवं परिचर्चा, 4 – समस्या आधारित अधिगम एवं परियोजना, 5 – परिचर्चा 6 – समस्या आधारित अधिगम एवं परियोजना।

13) नहीं। अर्थशास्त्र विद्यार्थियों को अपने कार्यस्थल, बैंक, कारखाने, दुकान, आदि अन्य स्थानों पर आर्थिक पक्षों को समझने का अवसर भी प्रदान करता है। विद्यार्थी विविध आर्थिक कार्यकलापों में शामिल व्यक्तियों से आर्थिक जीवन को समझने हेतु बातचीत कर सकता है।

14) पाठ्यपुस्तक के विषयवस्तु शिक्षक के लिए बेंचमार्क ज्ञान की तरह कार्य करते हैं। परीक्षा पाठ्यपुस्तक में निहित विषयवस्तु के आधार पर होती है।

15) पाठ्यपुस्तक विशिष्ट विषयक्षेत्र से संबंधित संप्रत्यय के मूलभूत विचारों को प्रदान करता है। मीडिया के द्वारा अर्जित ज्ञान पाठ्यपुस्तक द्वारा प्रदत्त आधारभूत ज्ञान को संपोषित करता है।

16) क) हमारे आर्थिक समझ को विकसित करता है

ख) आर्थिक क्षेत्र में क्या हो रहा है इससे अद्यतन करता है

ग) आर्थिक मुद्दों के प्रति संवेदनशीलता विकसित करता है।

17) पाठ्यपुस्तक विशिष्ट संप्रत्ययों या आर्थिक मुद्दों के प्रति सिर्फ आधारभूत विचार प्रदत करते हैं। पूरक पाठ्यसामग्री, कक्षाकक्ष अधिगम क्रियाकलाप के रूप में उन पुस्तकों में पठित आधारभूत विचारों के प्रति, हमारी समझ विकसित करता है।